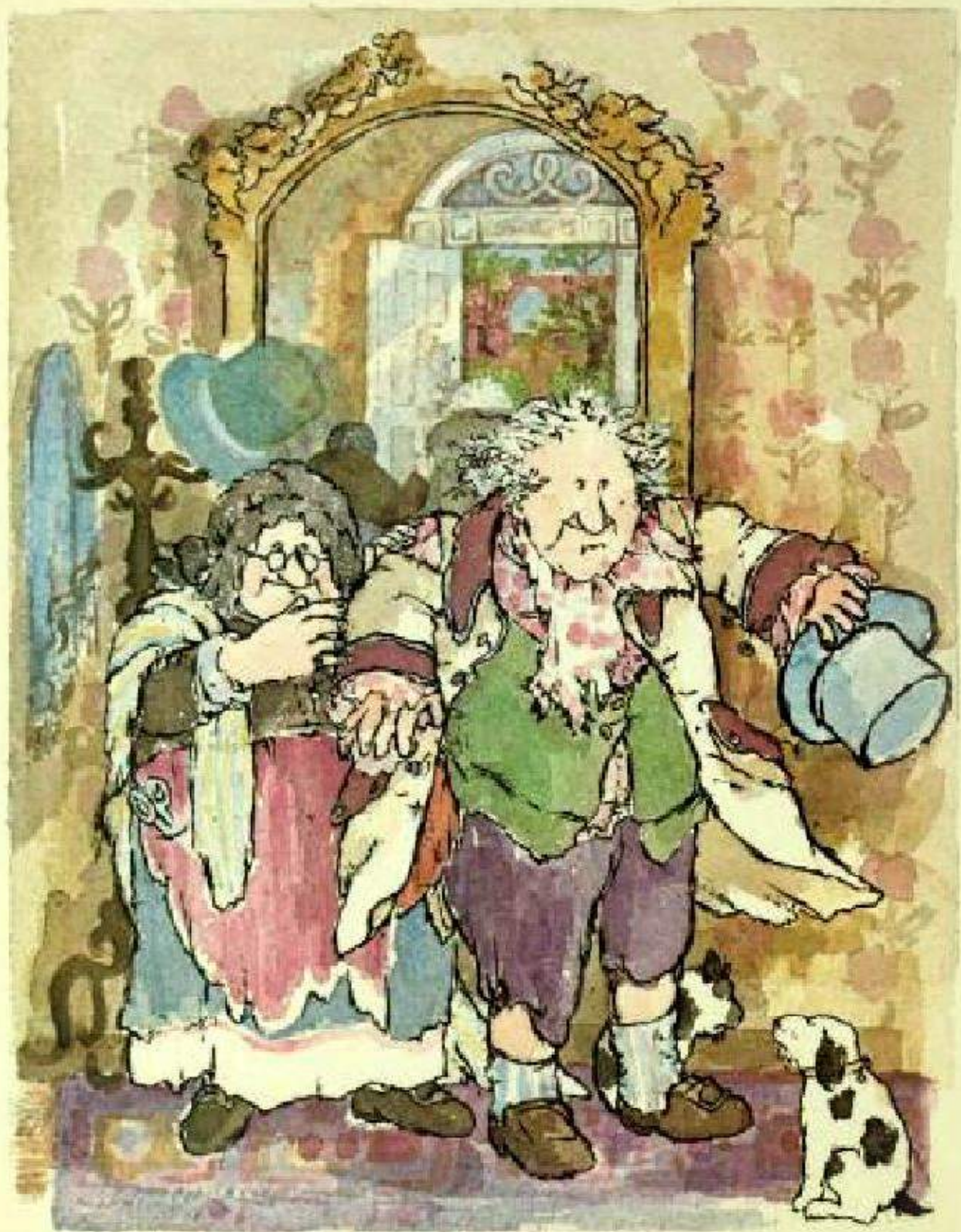


डफी और शैतान

हार्वे, हिंदी : विदूषक





डफी और शैतान

हार्वे, हिंदी : विदूषक



Illustration by Old Jones.

ट्रॉव-मैनर के ज़र्मीदार लोवेल की कोई पत्नी नहीं थी. उनकी नौकरानी बूढ़ी जोन उनके लिए खाना बनाती और घर की सफाई का काम करती थी. पर बूढ़ी जोन की आँखें अब कमज़ोर हो गईं थीं और उससे बारीकी के काम - कताई, सिलाई और बुनाई नहीं होती थी. कुछ दिनों बाद ज़र्मीदार के कपड़े इतने पुराने हो गए कि उन्होंने बूढ़ी जोन के लिए एक हेल्पर लाने की सोची.

इसे ध्यान में रखकर वो एक दिन सुबह चर्च-टाउन गए.



शहर के रास्ते में उन्हें बहुत ज़ोरों का शोर सुनाई दिया. अचानक उनके सामने के घर का दरवाज़ा खुला और उसमें से एक लड़की चिल्लाती हुई भागी. झाड़ू लिए हुए एक बूढ़ी औरत उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे-पीछे दौड़ रही थी. वो चिल्ला रही थी, “आलसी लड़की, रुक! मैं अभी तुझे देखती हूँ!”

“क्या हुआ चाची?” ज़र्मीदार ने बूढ़ी औरत से पूछा. “आप में और डफी में आखिर क्यों लड़ाई चल रही है?”

“आपको क्या बताऊँ, ज़र्मीदार साहिब,” बूढ़ी औरत ने रोते हुए कहा. “आप ही बताएं कि मैं इस नाचीज़ लड़की का क्या करूँ? वो दिन भर लड़कों के साथ गुलछर्रे उड़ाती है. वो घर में कोई काम नहीं करती है – न दलिया बनाती है, न कताई करती है और न ही मोज़े बुनती है!”

“उनकी बात पर आप यकीन न करें, श्रीमान,” उस लड़की ने एप्रन से आंसू पोछते हुए कहा. “मैं घर का सारा काम करती हूँ, मैं बड़ी मेहनत से कताई करती हूँ, और लगन से बुनाई करती हूँ और फिर भी मुझे दिन भर गालियाँ और चांटे ही मिलते हैं.”





ज़र्मींदार लोवेल को लगा कि औरत और डफी को एक-दूसरे से अलग होने में काफी खुशी होगी. इसलिए उन्होंने लड़की से पूछा कि क्या वो ट्रोव-मैनर में चलकर उनकी बूढ़ी नौकरानी की मदद करेगी.

“आप मुझे एक बार आजमा कर तो देखें, श्रीमान,” डफी ने जवाब दिया. “आपको कोई तकलीफ नहीं होगी, मैं आपसे इसका वादा करती हूँ.”

“चलो अच्छा हुआ उस कामचोर लड़की से पिंड तो छूटा!” बूढ़ी औरत ने कहा. फिर डफी ने अपनी स्कर्ट मोड़ी और घोड़े पर ज़र्मींदार लोवेल के पीछे बैठ गई. फिर दोनों ट्रोव-मैनर की ओर चले.

ट्रॉव-मैनर पहुँचने पर बूढ़ी जोन उन्हें दरवाज़े पर ही खड़ी मिली.
“देखो, यह डफी है,” ज़मींदार लोवेल ने कहा, “यह लड़की बुनाई और
कताई में आपकी मदद करने के लिए यहाँ आई है. उसे कुछ अच्छा
खाना दो और फिर उसे काम बताओ.”



उसके बाद डफी ने पेट भरकर खाना खाया. डफी और बूढ़ी जोन का एक-दूसरे के साथ परिचय हुआ. फिर बूढ़ी जोन, डफी को ऊपर के कमरे में ले गई जहाँ पर कताई के लिए ऊन रखा रहता था. बूढ़ी जोन, ने डफी को बताया कि ज़र्मीदार लोवेल को एक जोड़ी ऊनी मोज़ों की सख्त ज़रूरत थी. जो मोज़े वो अभी पहन रहे थे उनपर अब सिर्फ पैबंद ही बाकी बचे थे. फिर बूढ़ी जोन, ने डफी को कुछ ऊन दिया और उसे चरखा दिखाया. फिर वो नई हेल्पर की बुनाई देखने के लिए वहीं ठहरी.

“बात अजीब है, पर है सच्ची” डफी ने कहा, “अगर लोग मुझे घूर रहे हों तो मुझसे रत्ती भर भी काम नहीं होता है – खासकर कताई का काम. उसके लिए मैं बिल्कुल अकेले काम करती हूँ.”

फिर बूढ़ी जोन, डफी को अकेला छोड़कर वहां से चली गई. यह अच्छा भी हुआ क्योंकि डफी को कताई बिल्कुल नहीं आती थी. चरखा कैसे काम करता है उसने यह समझने की कोशिश की. कुछ ही देर में उसने मशीन के सभी अंजर-पंजर अलग-अलग कर डाले. अब मशीन पूरी तरह से खुली पड़ी थी और ऊन उलझा पड़ा था.

“भाड़ में जाए कताई!” वो रोते हुए चिल्लाई. “और भाड़ में जाए बुनाई! मेरी बला से, अब शैतान ही आकर ज़र्मीदार लोवेल के मोज़े बनाएगा!”





डफी ने यह शब्द कहे ही थे कि ऊन के ढेर के पीछे से एक छोटा, पूँछ वाला बौना शैतान बाहर निकला. “मैं आपकी सेवा में हाज़िर हूँ, प्रिय डफी,” शैतान ने झुककर सलाम करते हुए कहा. “मैं आपके लिए कताई और बुनाई का काम करूँगा. आपको कैसा लगेगा?”

“क्या तुम इस मशीन के अंजर-पंजर जोड़ना और उसे चलाना जानते हो?” डफी ने पूछा.

“यह तो मेरे बाएं हाथ का खेल है,” शैतान ने कहा. फिर शैतान ने बेहद तेज़ी से मशीन के सभी अंजर-पंजर जोड़े. कुछ ही मिनटों में उसने ऊन को बुनकर धागा बना दिया था.





“आपने क्या कहा मोज़े?” शैतान ने कहा. फिर उसने अपनी जेब में से दो ऊन बुनने वाली लम्बी सिलाई निकालीं. पलक झपकते ही अब ऊन की जगह उसके हाथों में एक जोड़ी मोज़े मौजूद थे. “मुझे यकीन है कि यह मोज़े ज़र्मीदार साहिब को एकदम फिट आयेंगे,” उसने कहा.





“मुझे इसके लिए तुम्हें क्या देना होगा?” डफी ने पूछा.

“फूटी कौड़ी भी नहीं,” शैतान ने जवाब दिया. “मैं आपके लिए जितनी मर्जी उतनी कटाई और बुनाई करूंगा – क्योंकि मेरे लिए यह सिर्फ एक मजे का खेल है. पर तीन साल बाद मैं आपको यहाँ से ले जाऊँगा – नहीं तो आपको मेरा सही नाम बताना पड़ेगा!”

“तुम्हारा नाम?” डफी ने पूछा.

“हाँ, बिल्कुल सही. आप या मेरा नाम बतायें या फिर मेरे पिता का. उससे कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि हम दोनों के एक ही नाम हैं! नाम का अनुमान लगाने के लिए आपके पास पूरे तीन साल हैं. और आप जितने चाहें उतने अनुमान लगा सकती हैं. इस बीच मैं बिना कुछ लिए आपके लिए कटाई और बुनाई करूंगा. आप इस बारे में सोचें.” और जैसे ही वो शैतान आया था, वैसे ही वो गायब भी हो गया.

उसके बाद पूरी दोपहर डफी ऊपर वाले कमरे में सोती रही. रात के खाने के समय वो हाथ में मोज़े लेकर नीचे उतरी. बूढ़ी जोन को डफी की स्पीड देखकर बहुत आश्चर्य हुआ और उसने अपना ताज्जुब व्यक्त करते हुए कहा, “यह मोज़े तो रेशम जैसे मुलायम हैं!”

“वो चमड़े जैसे मज़बूत हैं!” अगले दिन ज़र्मीदार साहिब ने ऐलान किया. उन्होंने शिकार पर जाने के लिए अपने नए मोज़े पहने. पूरे दिन काँटों भरी झाड़ियों और गीली घास में घूमने के बाद जब वो शाम को घर लौटे तो भी उनके पैर एकदम सूखे थे और उन्हें एक भी खरोंच नहीं आई थी. “मैंने आजतक इतने बढ़िया मोज़े कभी नहीं पहने हैं!” ज़र्मीदार साहिब ने कहा.



अगले दिन इतवार था. ज़र्मीदार साहिब अपने नए मोज़े पहन कर चर्च गए. उनके पड़ोसी और जान-पहचान वाले उनके मोज़ों के डिजाईन और रंगों पर मंत्र-मुग्ध हो गए और उन्हें बहुत देर तक निहारते रहे. वो मोज़े रेशम की तरह मुलायम और चमड़े की तरह मज़बूत थे. फिर जब पादरी ने आकर मोज़ों को देखा तब उसने भी कहा, "सच में वो लड़की डफी बहुत सुन्दर कताई और बुनाई करती है!"







जल्द ही ज़र्मीदार साहिब ने डफी से कुछ और चीज़ें बनाने की फरमाइश की. उन्होंने डफी से शिकार पर जाने के लिए एक विशेष जैकेट बनाने को कहा. जब कभी ज़र्मीदार साहिब डफी से किसी चीज़ की फरमाइश करते तब डफी तुरंत ऊपर वाले कमरे में चली जाती.

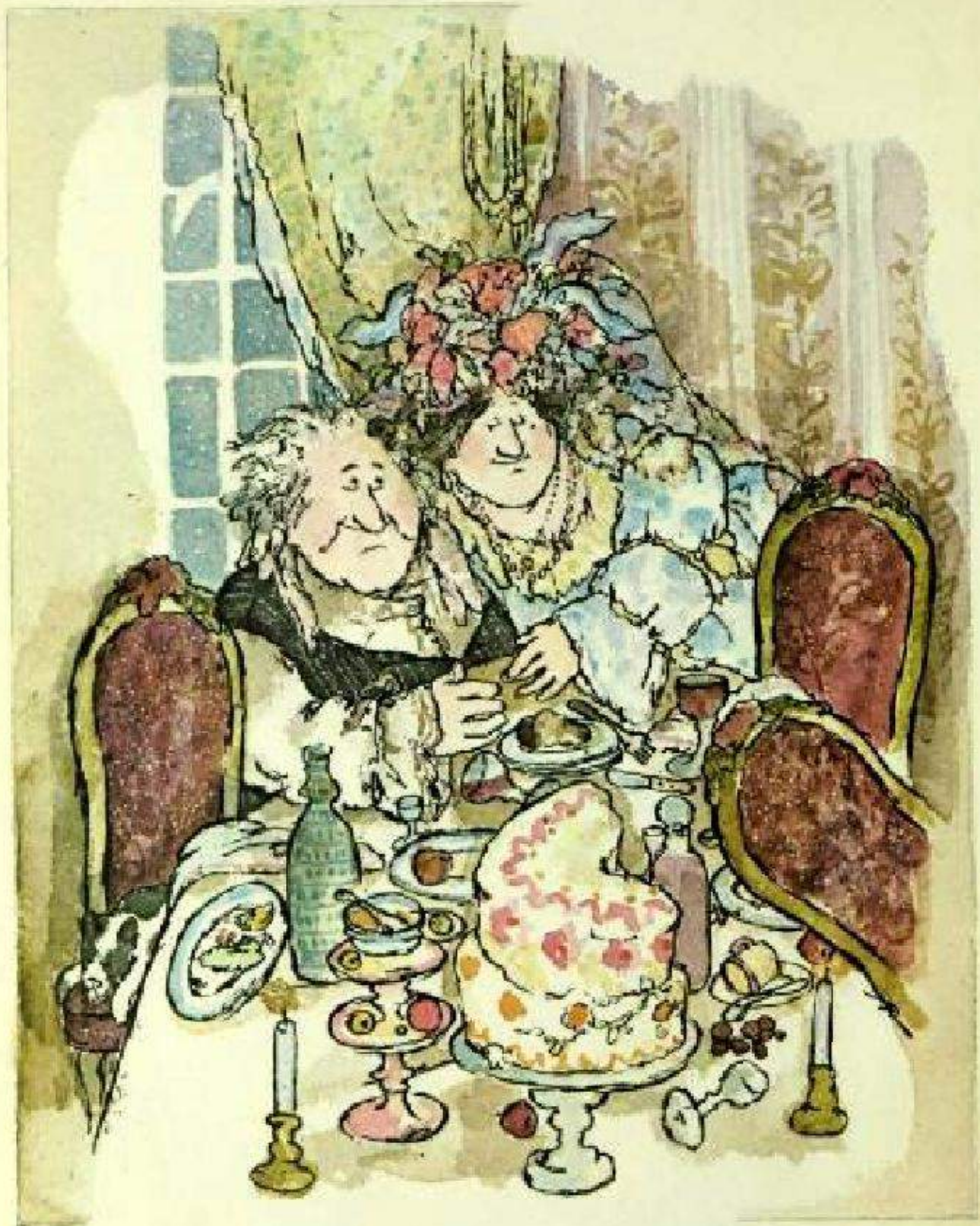
वहां पर वो शैतान मशीन पर मुस्कुराते हुए उसका इंतज़ार करता होता. “ज़र्मीदार साहिब के मोजों को काफी प्रसिद्धी मिली है,” उसने डफी से कहा, “पड़ोस के सभी लोग उनकी चर्चा कर रहे हैं.”

“हाँ, यह बिल्कुल सच है,” डफी ने जवाब दिया. “पर अब ज़र्मीदार साहिब शिकार के लिए एक विशेष जैकेट चाहते हैं. मालूम नहीं उसके बाद वो क्या चाहेंगे.”

“कोई दिक्कत की बात नहीं है,” शैतान ने कहा. “पर आपने अभी तक मुझे मेरा नाम नहीं बताया है?”

फिर डफी ने अपने कंधे उचकाए. तीन साल तक तो वो शैतान डफी के लिए कताई और बुनाई करेगा. उसके बाद वो चाहे उसे उठाकर ले जाए. उसके बाद शैतान ने शिकार के लिए एक खास जैकेट बनाई. फिर समय-समय पर डफी ऊपर के कमरे में से बुनी हुई उपयोगी चीज़ें नीचे लेकर आती. ज़र्मीदार साहिब उसके काम से बहुत खुश थे. इस तरफ डफी का जीवन बड़े आराम से गुजरने लगा.





एक दिन ज़मींदार साहिब ने सोचा : क्योंकि डफी इतनी अच्छी कताई और बुनाई करती है तो शायद वो एक अच्छी बीबी भी बने? क्या वो मेरी पत्नी बनना पसंद करेगी? फिर ज़मींदार साहिब ने उससे शादी का प्रस्ताव रखा और डफी ने उसे स्वीकार भी किया. बड़ी धूमधाम से उनकी शादी हुई.

अब डफी कोई साधारण लड़की नहीं थी. वो अब ट्रोव-मैनर की लेडी डफी बन गई थी. वो अब महंगे रेशमी कपड़े पहनती थी. उसके लाल ऊंची एड़ी वाले जूते सीधे फ्रांस से आते थे. जब डफी ऊपर के कमरे में ज़मींदार साहिब के लिए कुछ नहीं बुन रही होती तब वो चक्की के पास पड़ोस की औरतों के साथ नाच रही होती. मक्का पिसने तक वो अन्य महिलाओं के साथ मज़ा कर रही होती.





पर यह सब कब तक चलता. उस शैतान ने डफी को तीन साल का समय दिया था और अब तीन साल खत्म होने को आए थे. अब शैतान, डफी का मज़ाक उड़ाने लगा था. डफी को पता था कि अगर वो शैतान का सही नाम नहीं बता पाई तो फिर वो उसे वहां से उठाकर ले जाएगा. इस वजह से डफी अब बहुत परेशान और दुखी रहने लगी थी.



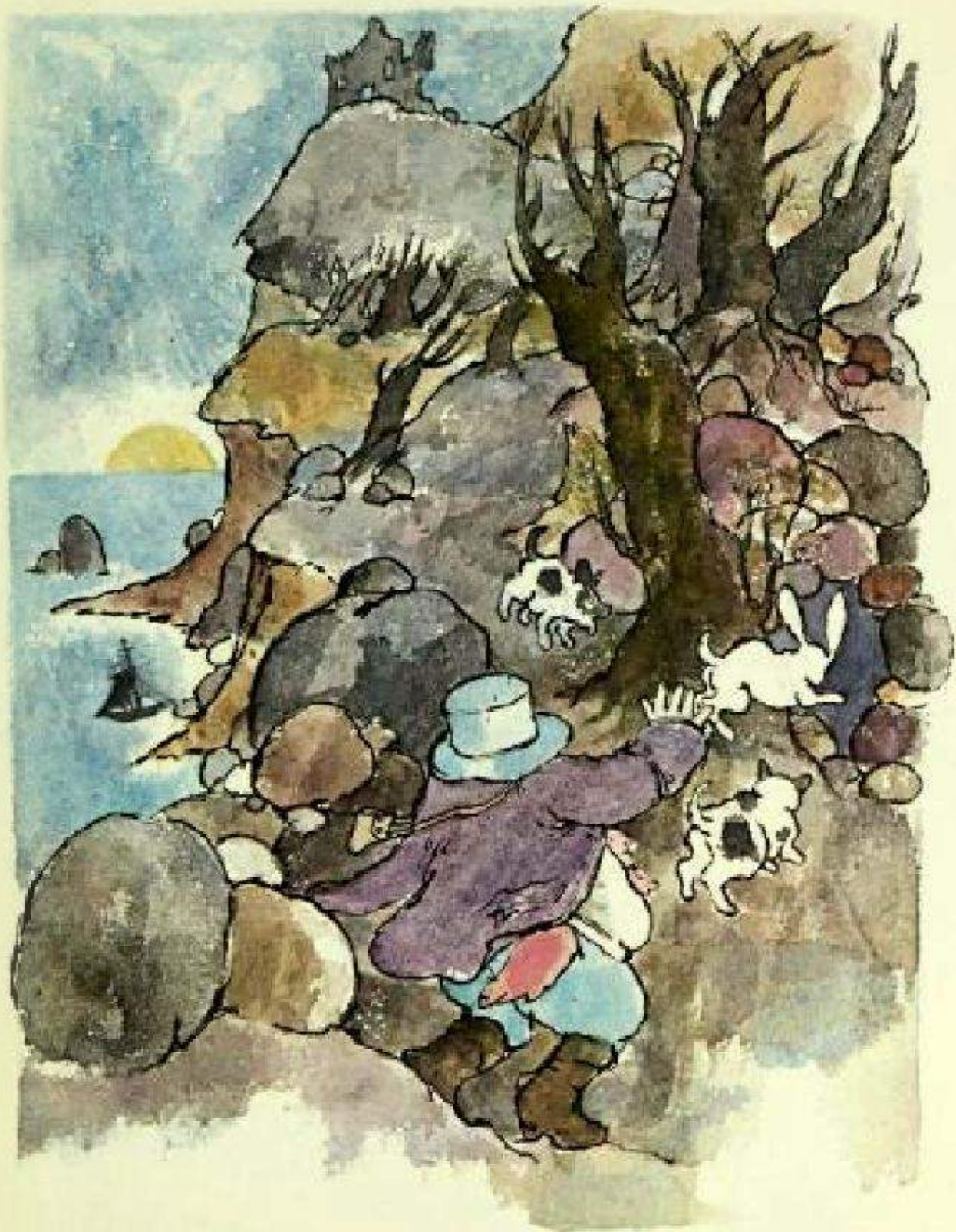
बूढ़ी जोन को भी डफी की परेशानी का एहसास हुआ. फिर एक दिन डफी ने अपना दिल हल्का करने के लिए बूढ़ी जोन को उस शैतान की पूरी कहानी बताई.

“अच्छा को यह असलियत है!” बूढ़ी जोन ने कहा. “जब तुम मेरी जैसी बूढ़ी हो जाओगी तो तुम बहुत सारी बातें और रहस्य जान जाओगी. उनमें से कई तो उस शैतान को भी नहीं पता होंगे. मैं तुम्हारी मदद करने की भरपूर कोशिश करूंगी, प्रिय डफी.” फिर बूढ़ी जोन ने कहा. “मुझे नीचे के तहखाने में से सबसे तेज़ और शक्तिशाली बियर का एक पीपा चाहिए. और डफी सुनो, कल चाहें कितनी देर हो जाए रात को तुम तब तक मत सोना जब तक ज़र्मींदार साहिब शिकार से वापिस नहीं आते.”





अगले दिन ज़मींदार साहिब रोजाना जैसे शिकार खेलने गए. वो जंगलों और वादियों में तब तक घूमते रहे जब तक उनके कुत्ते भूख से थककर चूर-चूर नहीं हो गए. पर उस दिन उनके हाथ कोई शिकार नहीं लगा. ज़मींदार साहिब खाली हाथ लौट ही रहे थे तभी उन्हें भागता हुआ एक जंगली खरगोश दिखा. कुत्तों ने खरगोश का पीछा किया और ज़मींदार साहिब भी उसके पीछे कोई एक मील दौड़े. उन्हें दलदल में से होकर गुज़ारना पड़ा. जैसी ही उन्हें लगा कि वो खरगोश को पकड़ लेंगे तभी वो तेज़ी से एक गुफा में लुप्त हो गया. वो गुफा असल में शैतानों और चुड़ैलों के मिलने का एक अड्डा था.





गुफा के मुँह पर कुत्ते भूकें और चिल्लाए पर डर के मारे गुफा में अन्दर नहीं घुसे. पर ज़मींदार साहिब उस गुफा में घुसे जिसमें उल्लू और चमगादड़ मंडरा रहे थे. गुफा के अंत में उन्हें हल्की सी रोशनी दिखी और वहीं पर सब शैतान और चुड़ैलें इकट्ठा थीं. कुछ अपनी झाडुओं पर सवार थीं तो कुछ हवा में लटके तीन पैरों वाले स्टूल पर बैठी थीं, कुछ बड़ी इल्लियों पर सवार थीं. बीच में जलते हुए अलाव की देखभाल एक बूढ़ी औरत कर रही थी जो उन्हें अपनी नौकरानी बूढ़ी जोन जैसी दिखी. उनके बीच एक छोटा सा पूँछ वाला शैतान भी था.

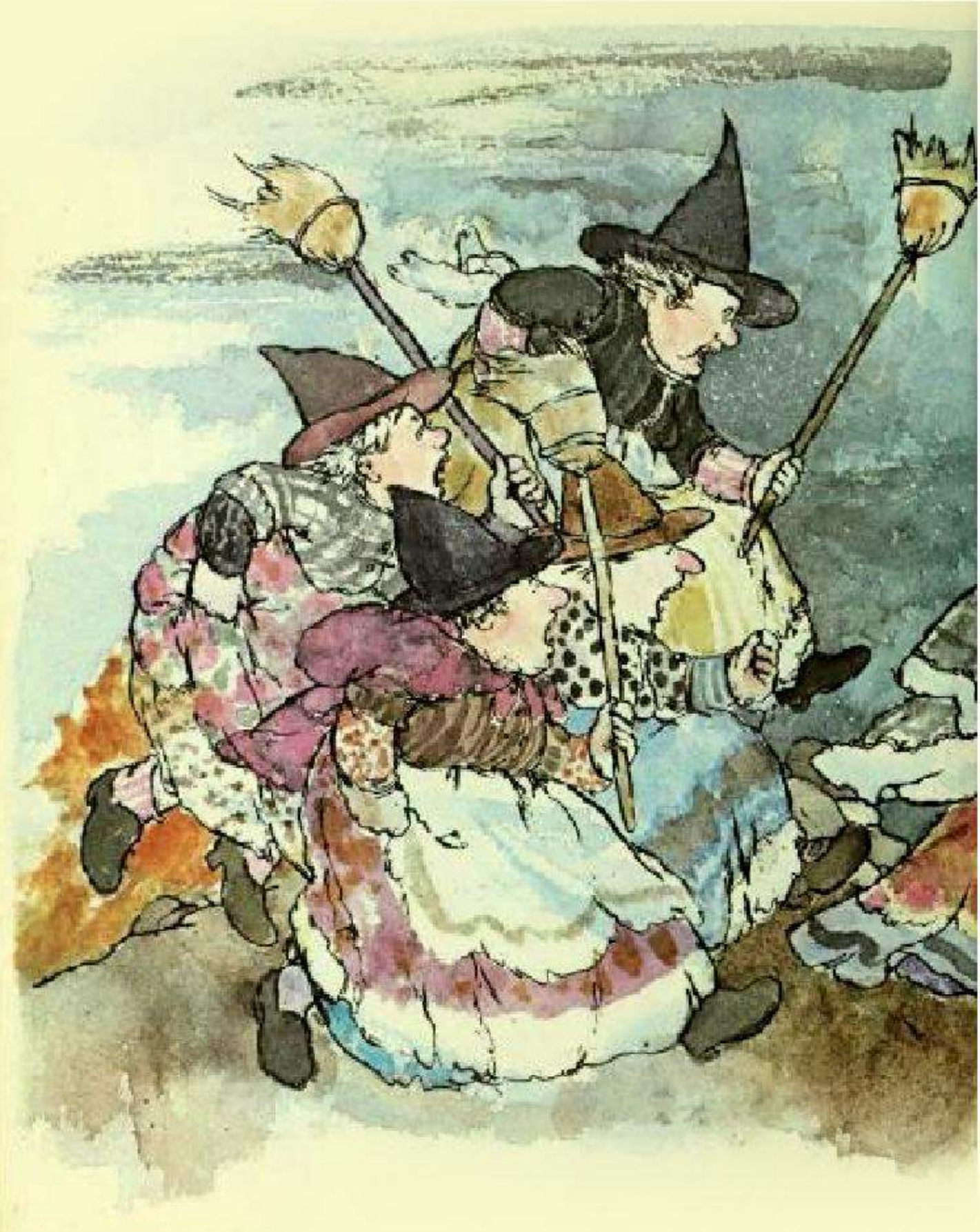




बूढ़ी जोन कुछ-कुछ देर बाद उस छोटे शैतान का मग, बियर से दुबारा भर देती थी. बीच-बीच में बूढ़ी जोन फिडल पर संगीत बजाती. उन धुनों पर शैतान और चुड़ैलें हवा की तेज़ी से नाच रही थीं.

ज़र्मीदार साहिब ने कुछ देर तन उन सबको घूरकर देखा. फिर उनका भी उस जश्न में भाग लेने का मन करा. फिर उन्होंने अपनी टोपी टांगी और कहा, “चलो मैं भी चुड़ैलों के नाच में शरीक होता हूँ!”





अगले ही क्षण अलाव की आग बहुत ज़ोरों से जली और फिर ज़र्मीदार साहिब भी हवा की तरह उन चुड़ैलों के साथ नाचने लगे. उस दिन, आधी रात के बाद ही, वो अपने घर के दरवाज़े के बाहर पहुंचे.





डफी उस समय भी जगी थी और बेचैनी से उनका इंतज़ार कर रही थी. फ़िक्र और डर से उसके माथे पर शिकन पड़ी थीं. फिर ज़मींदार साहिब आग के सामने रखी अपनी कुर्सी पर धम्म से आकर बैठ गए. उन्होंने तुरंत पूरी घटना डफी को सुनाई.

“क्या यह पूरी कहानी है?” डफी ने सुनने के बाद कहा. “या फिर उसमें अभी कुछ बाकी है?”

“हाँ, एक बात और हुई,” ज़मींदार साहिब ने कहा, “आखरी मग बियर पीने के बाद उस छोटे शैतान ने एक गाना गाया.”

“उस गाने के बोल क्या थे?” डफी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा.



ज़र्मीदार साहिब ने अपना माथा खुजलाया. "मेरे खयाल से बोल इस प्रकार थे:

"कल! कल! कल का दिन महान होगा!

मैं उसे ले जाऊंगा! उसे ले जाऊंगा! उसे ले जाऊंगा!

उसे रोने दो! सुबकने दो! भीख मांगने दो! प्रार्थना करने दो!

उसे कभी भी मेरा नाम पता नहीं चलेगा..."

"क्या नाम?" डफी चिल्लाई.

"..... मेरे खयाल से उसका नाम तरावे! वो कभी भी मेरे नाम - तरावे का, अनुमान नहीं लगा पायेगी!"





उसके बाद डफी बहुत ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी, और उसकी हँसी से ज़मींदार साहिब भी हंसने लगे. और जब वे दोनों और ज्यादा नहीं हंस पाए फिर वे पलंग पर सोने चले गए.

अगले दिन जब वो छोटा शैतान ऊपर के कमरे में आया तब डफी उसका इंतज़ार कर रही थी.

“अब तुम्हारा समय खत्म हो गया है, डफी,” शैतान ने कहा. अब उसकी आँखें चमक रही थीं और उसकी पूँछ उछल रही थी.

“क्या मैं तुम्हारे नाम का अनुमान लगा सकती हूँ?” डफी ने पूछा.

“ज़रूर! एक आखिरी बार, और फिर तुम मेरी होगी!” शैतान ने जवाब दिया. फिर उसने अपनी लम्बी पूँछ उठाकर उसे अपने सिर के ऊपर घुमाया.

“तर्रावे!” डफी चिल्लाई. “तर्रावे! तर्रावे!”





शैतान अपने असली नाम को सुनकर बहुत निराश हुआ. “यह तुमने खुद अनुमान नहीं लगाया है. किसी ने मेरा नाम तुम्हें बताया है!” शैतान ने ज़मीन पर अपने पैर पटके. “तुम्हें ज़रूर किसी ने मेरा नाम बताया है!” उसने फिर दुबारा ज़मीन पर अपने पैर पटके. “तुम्हें किसी ने मेरा नाम बताया है!” उसने तीसरी बार ज़मीन पर अपने पैर पटके. तभी उसी क्षण एक धुएं के बादल में शैतान सदा के लिए लुप्त हो गया. उसी वक्त शैतान की बुनी सब चीज़ें भी राख में बदल गईं.





ज़र्मीदार साहिब उस समय जंगल में शिकार कर रहे थे. उस दिन काफी सर्दी थी और बहुत ठंडी हवा चल रही थी. अचानक उनके पैरों से मोज़े गिर गए और उनकी शिकारी जैकेट भी गायब हो गयी. उस दिन ज़र्मीदार साहिब जब घर वापिस लौटे तो वो सिर्फ अपनी हैट और जूते पहने थे.

जब वो घर वापिस लौटे तो बूढ़ी जोन झाड़ू से पूरे घर की राख इकट्ठी कर रही थी. डफी उसके पीछे-पीछे पोछा लगा रही थी. ज़र्मीदार साहिब को देखकर डफी चिल्लाई: “मेरा पूरा कमरा और मशीन राख में मिल गई है. अब से मैं कुछ कताई और बुनाई नहीं करूंगी!”

फिर उसने ऐसा ही किया.



